

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 5168
(उत्तर देने की तारीख 02.04.2025)

उत्तर पूर्वी राज्यों में 'अरोमा' मिशन

5168 श्री बैजयंत पांडा:

क्या विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) उत्तर पूर्वी राज्यों में विशेषकर किसानों के लाभ, रोजगार सृजन और औद्योगिक संपर्कों के संदर्भ में 'अरोमा' मिशन की प्रमुख उपलब्धियाँ क्या हैं;
- (ख) क्या सरकार की 'अरोमा' मिशन और पुष्पकृषि मिशन को क्षेत्र के अतिरिक्त जिलों में विस्तारित करने की कोई योजना है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) इन पहलों के तहत किसानों और उद्यमियों को सहायता प्रदान करने में सीएसआईआर-एनईआईएसटी की विशिष्ट भूमिका क्या है, जिसमें स्थापित आवश्यक तेल आसवन इकाइयों की संख्या और भावी लक्ष्य क्या हैं;
- (घ) क्या सरकार उत्तर पूर्वी क्षेत्र में सुगंधित पौधों के उद्योग में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन या सब्सिडी पर विचार कर रही है; और
- (ङ.) उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सुगंधित उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के साथ एकीकृत करने के लिए एकट ईस्ट नीति के अंतर्गत क्या कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे निर्यात और क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सके?

उत्तर

माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान
(डॉ. जितेन्द्र सिंह)

- (क) वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) वर्ष 2017 में शुरू किए गए पहले चरण से ही सभी पूर्वोत्तर राज्यों में "सीएसआईआर-अरोमा मिशन" को क्रियान्वित कर रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत पूर्वोत्तर राज्यों में हासिल की गई कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नांकित हैं:
- 3,000 हेक्टेयर से अधिक भूमि को सुगंधित फसलों की खेती के अंतर्गत लाया गया है, जिससे ऊसर (बंजर), ऊबड़-खाबड़, सीमांत और अप्रयुक्त भूमि का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित हुआ है।
 - उच्च उपज देने वाली किस्मों की खेती और संगंधीय तेल उत्पादन के माध्यम से मूल्य संवर्धन के परिणामस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि हुई है (प्रति वर्ष 40,000 - 60,000 रुपये प्रति हेक्टेयर), जिससे उन्हें चावल जैसी पारंपरिक फसलों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य विकल्प मिल गया है।
 - 140 से अधिक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनसे 10,000 से अधिक किसानों को सीधे लाभ हुआ है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को औषधीय और सुगंधित पौधों (एमएपी) की खेती, कटाई, प्रसंस्करण और विपणन के सर्वोत्तम तरीकों के विषय में शिक्षित किया गया है।

- पूर्वोत्तर भारत में संगंधीय तेल की कुल 90 आसवन इकाइयाँ स्थापित की गई हैं, जो कृषि उत्पादन और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच के अंतर को समाप्त करती हैं। ये इकाइयाँ स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन को सहयोग प्रदान करती हैं, जिससे यह क्षेत्र संगंधीय तेलों के बाजार में अग्रणी बन गया है।
- सुगंधित फसलों की खेती के विस्तार और संगंधीय तेल से सम्बन्धित आसवन इकाइयों की सामूहिक आधार पर स्थापना से कृषि गतिविधियों और कटाई-पश्चात प्रसंस्करण क्षेत्रों (पोस्ट हार्वेस्ट प्रॉसेसिंग सेक्टर्स) दोनों में महत्वपूर्ण रोजगार सृजन (10 लाख श्रम दिन) हुआ है।
- रोपण सामग्री और अवसंरचना सम्बन्धी सहायता प्रदान करके इस मिशन ने लगभग 25 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और किसान उत्पादक कंपनियों (एफपीसी) को उद्यमिता, प्रसंस्करण और सुगंधित उत्पादों के विपणन में संलग्न होने की दृष्टि से सशक्त बनाया है, जिससे आत्मनिर्भरता और ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा मिला है।

(ख) सीएसआईआर सभी पूर्वोत्तर राज्यों में अरोमा मिशन गतिविधियों को क्रियान्वित कर रहा है। सुगंधित और पुष्पकृषि फसलों की खेती के अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार इस मिशन परियोजना का एक अंतर्निहित अंश है।

(ग) सीएसआईआर-उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनईआईएसटी), जोरहाट चरण-1 से ही सीएसआईआर-अरोमा मिशन में सक्रिय रूप से शामिल रहा है, तथा पूर्वोत्तर भारत में सुगंधित फसलों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। किसानों और उद्यमियों को सहायता प्रदान करने में सीएसआईआर-एनईआईएसटी का महत्वपूर्ण योगदान इस प्रकार है:

- इस संस्थान ने विभिन्न लक्षित फसलों, जिनमें लेमनग्रास, जावा सिट्रोनेला, पचौली, *केम्फेरिया गैलांगा*, अगरवुड, कैमोमाइल, जेरेनियम, रोजमेरी, लैवेंडर शामिल हैं, की 1.51 करोड़ की गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री (क्यूपीएम) सफलतापूर्वक उपलब्ध कराई है।
- सीएसआईआर-अरोमा मिशन के अंतर्गत सीएसआईआर-एनईआईएसटी ने लक्षित सुगंधित फसलों की आठ उच्च उपज वाली किस्मों को सफलतापूर्वक विकसित, पंजीकृत और वाणिज्यिकृत किया है। इन किस्मों को विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत की कृषि-जलवायु परिस्थितियों में पनपने के लिए डिज़ाइन किया गया है और इसने किसानों की आय बढ़ाने, स्थाई कृषि को बढ़ावा देने और क्षेत्र में सुगंधित फसल सम्बन्धी मूल्य श्रृंखला को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- सीएसआईआर-एनईआईएसटी ने सक्रिय रूप से किसानों और उद्योगों के बीच संपर्क को सुगम बनाया है, जिससे बेहतर बाजार पहुंच सुनिश्चित हुई है और पूर्वोत्तर में खेत से उद्योग तक के पारिस्थितिकी तंत्र का स्थायी निर्माण हुआ है। अब तक, हमने अरोमा मिशन के संगंधीय तेलों और अन्य उत्पादों की खरीद के लिए 10 से अधिक विभिन्न सुगंध उद्योगों को सीधे किसानों से जोड़ा है, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो गई है। मूल्य संवर्धन को सहयोग प्रदान करने और आजीविका के अवसरों में सुधार लाने के लिए किसानों, एसएचजी (स्वयं सहायता समूहों) और एफपीसी (किसान उत्पादक कंपनियों) को सामूहिक आधार पर कुल 39 संगंधीय तेल आसवन इकाइयाँ प्रदान की गई हैं।
- सुगंधित फसल सम्बन्धी अनुसंधान और विकास के वैज्ञानिक आधार को बढ़ाने के लिए, सीएसआईआर-एनईआईएसटी ने इस परियोजना के अंतर्गत उच्च गुणवत्ता वाले 65 से अधिक एससीआई-रेटेड शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। ये प्रकाशन फसल सुधार, संगंधीय तेल निष्कर्षण प्रौद्योगिकियों, मूल्य संवर्धन और स्थाई खेती सम्बन्धी प्रथाओं के क्षेत्रों में ज्ञान संवर्धन की दृष्टि से योगदान देते हैं।

- केम्फेरिया गैलांगा, होमोलोमेना एरोमेटिका जैसी प्रमुख सुगंधित फसलों के लिए कृषि-प्रौद्योगिकियों का क्षेत्र-विशिष्ट मानकीकरण किया गया है और कैमोमाइल को पूर्वोत्तर भारत की कृषि-जलवायु परिस्थितियों में उसकी खेती के अनुकूल बनाने के लिए उपयोग किया जा रहा है।

(घ) सीएसआईआर अरोमा मिशन के अंतर्गत किसानों को खेती, कटाई के बाद प्रसंस्करण और खेत पर प्रसंस्करण की तकनीकी जानकारी के साथ-साथ गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री निःशुल्क प्रदान की जाती है। बाजार की मांग का आकलन करने और खरीदारों को किसानों से जोड़ने के लिए नियमित उद्योग बैठकें आयोजित की जाती हैं। जनवरी 2025 में सीएसआईआर-एनईआईएसटी ने पूर्वोत्तर भारत के 20 से अधिक सुगंधित उद्योगों और सुगंधित फसलों से सम्बन्धित लगभग 180 किसानों को एक साथ लाते हुए उत्तर पूर्व अरोमा कॉन्क्लेव 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कॉन्क्लेव के परिणामस्वरूप प्रभावी बाइबैक तंत्र को अंतिम रूप दिया गया, किसान-उद्योग साझेदारी को सुदृढ़ किया गया, किसानों के लिए स्थिर बाजार पहुंच सुनिश्चित करने के साथ-साथ उद्योगों के लिए विश्वसनीय कच्चे माल का स्रोत भी सुनिश्चित किया गया। मेसर्स अजमल परफ्यूमर्स, मुंबई, मेसर्स अश्री नेचुरल्स, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश, मेसर्स अरोमा इंडिया, गुवाहाटी, मेसर्स यथावत एसेंशियल ऑयल, आगरा और एरोमेटिक एंड एलाइड प्राइवेट लिमिटेड, बरेली, उत्तर प्रदेश ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के किसानों द्वारा उत्पादित सगंधीय तेल की सीधी खरीद के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

(ङ) अरोमा मिशन के अंतर्गत सीएसआईआर मणिपुर सरकार, मेघालय सरकार (मेघालय बेसिन डवलपमेंट अथॉरिटी) और नागालैंड सरकार (नागालैंड बायोरिसोर्स मिशन) सहित विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और क्षेत्र की एजेंसियों के साथ मिलकर काम कर रहा है।

सीएसआईआर ने दिनांक 4 अगस्त 2022 को एग्रीकल्चरल एंड प्रॉसेस्ड फूड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट डवलपमेंट अथॉरिटी (एपीईडीए), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित एनपीएनपी (नेशनल प्रोग्राम ऑफ नेचुरल प्रोडक्ट्स) योजना के अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादों पर इंडिया-यूनाइटेड किंगडम वर्चुअल बायर-सेलर मीट में भाग लिया। सीएसआईआर ने इन मिशन कार्यक्रमों के अंतर्गत उत्पादित प्राकृतिक उत्पादों की निर्यात क्षमता का पता लगाने के लिए सुगंध और फूलों की खेती पर आधारित विभिन्न प्रौद्योगिकियों/उत्पादों को प्रस्तुत किया।
